International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.2 Nov-Dec 2023

ज्योत्स्ना मिलन की कहानी विधा में चित्रित नारी विमर्श।

डॉ. शैलजा धोंडीराम गवळी
महाबळेश्वर।
Corresponding Author – डॉ. शैलजा धोंडीराम गवळी
DOI- 10.5281/zenodo.14228302

प्रस्तावनाः

हिंदी साहित्य जगत में आज तक अनेक विधाओं द्वारा नारी विमर्श पर विचार प्रस्तुत हुए हैं। उपन्यास, कहानी, नाटक आदि अनेक विधाओं द्वारा नारी की समस्याएँ, उसकी विडंबना, उसकी निर्बलता पर आज तक काफी विस्तृत रूप से विमर्श हुआ है। इसमें पुरुष लेखकों का भी बहुत बडा योगदान है। इसमें प्रमुख रूप से रघुवीर सहाय जी ने नारी को बेचारी कहा है, तो कई महिला लेखिकाओं ने भी नारी की पीड़ा, उसका अंतर्द्वंद्व अपने लेखन द्वारा प्रकट किया है। जिसमें मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला सिन्हा, मंजुला भगत, मृणाल पांडे, नासिरा शर्मा आदि लेखिकाओं ने भी नारी के मन की गहराइयों तक पहुँचने का प्रयास किया है। आज तक साहित्य में नारी के प्रश्न, उसका डर, उसकी भीषणता को ज्यादातर चित्रित किया है। पुरातन काल से नारी को देवी का रूप माना गया है मगर वास्तव में उसे भगवान छोड़िए इंसान का भी दर्जा कभी नहीं मिला। आज तक नारी के प्रति इसी दृष्टि को लेकर विस्तृत लेखन किया जा रहा है, मगर ज्योत्स्ना मिलन की कहानियों में जो नारी विमर्श पाया जाता है वह इस विचार को एक नई दृष्टि प्रदान करता है। यहाँ ज्योत्स्ना मिलन जी की नारी कई समस्याओं का सामना करती है, प्रतिकूल परिस्थिति से लड़ती है, मगर वह अपने जीवन में कभी हार नहीं मानती बल्कि आशावादी दृष्टिकोन से अपनी जिंदगी की ओर बढ़ती है। ज्योत्स्ना जी नारी की छटपटाहट, उसकी इच्छाएँ, उसकी समस्याएँ, इस तरह प्रस्तुत करती है कि कहीं भी पुरुष भावना को ठेस नहीं पहुँचती। वास्तविक यहाँ स्त्री और पुरुष के बीच का संघर्ष नहीं है बल्कि यहाँ नारी के अपने कुछ अंधेरे कोने है जिसको वह टटोलना चाहती है।

● आशावादी नारी

ज्योत्स्ना मिलन की कहानियों में चित्रित नारी आशावादी है। हर स्थिति में, हर पल में अपने आप को टूटने से बचाती है। अपने आप को एक नई उम्मीद से खड़ा करती है, पर हार नहीं मानती। 'धड़ बिना चेहरे का' कहानी की नारी वास्तविक जिस इंसान से शादी करती है वो उसे कतई पसंद नहीं। लड़की के मन में अपने सपनों में बसा एक सुंदर-सा चेहरा है, जो उस चेहरे को उस पति में ढूँढने लगती है। इस कहानी की नारी पूरी तरह से सत्य स्वीकारने के लिए तथा उस पर अमल करने के लिए तैयार होती है। यहाँ इस कहानी की नारी हार ना मानते हुए सच का सामना करते हुए अपनी जिंदगी गुजारती है। उसी प्रकार 'अपना घर' कहानी की अमीना अपने पति का घर छोड़कर आने के बाद पूरी तरह से बेघर हो जाती है। फिर भी वह हर वक्त उम्मीद बनाए रखती है कि कभी न कभी अपने खुद के घर में रहेगी। उसकी यही उम्मीद उसको उसके लक्ष्य तक पहुँचा देती है। उसी प्रकार 'बा' कहानी की बा सात साल की उम्र में ब्याह करके ससुराल आती है और पूरी जिंदगी गुजर जाने के बाद आखरी वक्त में अपनी इच्छा व्यक्त करती है कि उसे कहीं दूर जाना है। वास्तविक बा ने अपने जीवन में इतनी भीषणता सही है कि अगर वह चाहती तो उस वक्त जहर खाकर या समंदर में डूबकर मर सकती थी। मगर उसने कहीं दूर चले जाने की आशा व्यक्त की। मतलब यहाँ उसने जीने की नई उम्मीद बना ली थी। इससे ज्योत्स्ना जी, नारी का जीवन के प्रति आशावादी दृष्टीकोण प्रस्तुत करती हैं। कई समस्याओं के बावजूद जीवन की भीषणता, जीवन की मार्मिकता, जीवन में संघर्ष होने के बावजूद भी इनकी कहानियों की आम नारी आशावाद से जीना चाहती है।

● भारतीय समाज में नारी

ज्योत्स्ना जी की कहानी 'अंधेरे में' कहानी की दादी अपना पूरा जीवन परिवार के लिए समर्पित करती हैं, मगर जब वह कभी किसी के सामने अपनी राय या अपना मत रखना चाहती है तो बहू-बेटा उसे बेअक्ल करार देते हैं। इससे यह प्रतित होता है, चाहे आज नारी कितनी भी शिक्षित क्यों ना बने मगर दादी जैसे पात्र आज भी अपना हक, अपना मत प्रस्थापित करने के लिए पूरी तरह से असमर्थ है। उसी प्रकार 'मोहलत' कहानी की नीला जो अपने पति का घर छोड़ कर आई है, जिसे अपने पति के लौटने की कोई उम्मीद नहीं है; मगर कई सालों बाद वह अचानक से उसे लेने के लिए आ जाता है। तब उस वक्त नीला जिस भावनिक स्थिति से गुजरती है, इस बात से किसी को लेना देना नहीं है। घर का हर सदस्य यही चाहता है कि नीला किसी भी हाल में अपने ससुराल चली जाए। वास्तविक यहाँ नीला की कुछ भी गलती ना होने के बावजूद भी सजा कई सालों तक उसे मिली और आज जब वह जाना नहीं चाहती थी, उसने अपनी अलग जिंदगी बना ली थी, तभी वही पति झूठ बोलकर उसे अपने साथ ले जाना चाहता है। परिवार के लोग इसका विरोध करने के बजाय नीला को जाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह भारतीय परिवार

तथा भारतीय सोच ही नीला को पति के साथ जाने के लिए मजबूर करती है । और भारतीय नारी के साथ चाहे कितने भी अन्याय अत्याचार क्यों न हो, चाहे गलती हर बार पुरुष की ही क्यों न हो, सुलह हमेशा स्त्री को ही करनी पड़ती है । और इसलिए आज भी यह चित्र हर घर में पाया जाता है, चाहे नारी शिक्षित हो या अशिक्षित । समय जरूर बदला है मगर स्त्री के प्रति औरों की सोच तथा मानसिकता बिलकुल नहीं बदली है ।

•बालविधवा नारी

ज्योत्स्ना जी की कहानियों में चित्रित विधवा नारी का जीवन बहुत ही मार्मिक दर्शाया है । ज्योत्स्ना जी की 'खंडहर' कहानी की नानी एक बाल विधवा है । जो अपना सारा जीवन अपने बहू बेटे के लिए समर्पित करती है । मगर ढलती उम्र के पड़ाव पर उसका बर्ताव अचानक बदल जाता है । वह सज-सँवरकर अपने पति का इंतजार करने लगती है । फिर से उम्मीद बाँधे रहती है कि उसका पति आएगा और अपने साथ विदाई कर ले जाएगा । उसी तरह 'झमकू' कहानी की नारी झमकू भी बाल विधवा है । जीवन का मतलब पता चले इससे पहले उसका जीवन गुजर जाता है । उसकी रंग भरी दुनिया बेरंग बन जाती है और जाते समय पति झोली में केवल एक लड़का पूँजी के रूप में डाल कर चला जाता है । जिसे देखकर वह अपनी पूरी जिंदगी बिताती है । 'अपना घर' कहानी की अमीना भी एक बाल विधवा है । जब उसकी खेलने-कूदने की उम्र थी तब शादी हो जाती है । शादी-शुदा बन जाने पर सौतन को अपनाना पड़ता है, ऊपर से सबका अत्याचार, इन सभी समस्याओं का सामना करते हुए वह इतनी थक जाती है कि अपने पति का घर छोड़ कर वह अपना खुद का घर बनाती है । सभी नारी पात्र बाल विधवा जीवन की भीषणता को दर्शाते हैं । वास्तविक जीवन में पत्नी मरे तो खुशी से पति का विवाह किया जाता है, मगर यह बात अगर नारी के बारे में सोच ले तो उसके लिए पाप बन जाता है, इसी वास्तविकता को ज्योत्स्ना जी ने दर्शाया है ।

•नारी का मानसिक अंतर्द्वंद्वः

ज्योत्स्ना जी ने नारी चित्रण करते समय नारी की अंतरात्मा को, उसके अंधेरे कोनों को टटोलने की कोशिश की है । जहाँ झाँकने पर बहुत कुछ धँसा मिलता है । उसकी छटपटाहट, मानसिकता, उसका संघर्ष सभी यहाँ पर अनकहे दिख जाता है । ज्योत्स्ना जी की कहानियों के नारी पात्रों द्वारा आम नारी की मानसिक स्थिति का परिचय मिलता है । 'चीख के आर-पार' कहानी की अश्विनी का पति रात को चिखता है, जिसका पता सारे मोहल्ले को चलता है मगर अश्विनी को नहीं । जब सच्चाई पता चलती है कि रात को उसने ही अपने पति का गला दबाया है तो उसे अपने आप पर विश्वास नहीं होता । उसी तरह 'शंपा' कहानी की शंपा भी इसी मानसिक स्थिति से गुजर रही है । उसकी जिंदगी में दो दौर है जब एक दौर वह शरीर में होती है, और कभी-कभी बिलकुल शरीर से बाहर होती है । वह चाहती है कि वह अपने पति के साथ उतना ही प्यार करें, मगर वह अपने शरीर में रहती नहीं । जब उसका पति उसे प्यार करने की कोशिश करता है तो वह जिंदा लाश बन जाती है । एक दौर ऐसा भी आता है जहाँ वह अपने मन से तैयारी जरूर करती है, अपने पति को उसका अधिकार देने के लिए; मगर कुछ दिनों के बाद उसका शरीर भी विद्रोह करने लगता है । शंपा पूरी तरह से इसमें छटपटाने लगती है । अपने दौर से वह आजाद नहीं हो पाती । 'संभावित रुकमा तथा प्रमुख स्त्री के बीच' कहानी की मृत स्त्री मरने से पहले अजीब बर्ताव करने लगती है । किसी का गला दबाना, किसी को मारने दौड़ना, मनचाही चीजों को खाना। वैसे उसने कभी जिंदगी में मुँह तक नहीं खोला था । जो मिला वह खाया, जो दिया वह पहना और जो बोला गया किया । लेकिन अपने जीवन के अंतिम दिनों में उसका विद्रोह बाहर निकल आता है । इन सब बातों द्वारा ज्योत्स्ना मिलन जी स्त्री के मन का अंतर्द्वंद, छटपटाहट दर्शाती है ।

• आत्मनिर्भर नारी

ज्योत्स्ना मिलन जी की कहानियों में चित्रित नारी पात्र संघर्ष करते नजर जरूर आते हैं, मगर वह अपने आप पर विश्वास रखते हैं तथा उम्मीद कायम रखते हुए आशावादी जिंदगी जीना पसंद करते हैं । ज्योत्स्ना जी की कहानी 'अपना घर' में चित्रित अमीना आत्मनिर्भर बन जाती है । जो पति के लाख मनाने पर उसके घर ना जाकर खुद का अपना घर बनाती है । अकेली रहकर परिस्थितियों का सामना करके, हर मुसीबत से लड़के, वह खुद का घर बना लेती है । 'कुसुमा धर्मराज' कहानी की कुसुमा भी जब अपने पति के साथ गाँव से दूर रहने लगती हैं तो छह-सात घरों का खाना बनाकर घर चलाती है, मगर कहीं भी हाथ फैलाती नजर नहीं आती । वास्तविक वो अपने गाँव की सरपंच थी । लेकिन अपने आप को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी बनाने के लिए खुद काम करना पसंद करती है । साथ ही 'झमकू' कहानी की झमकू उम्र भर अपने बेटे को सँभालकर, उसकी जिम्मेदारी पूरी तरह से निभाती हैं । यहाँ ज्योत्स्ना मिलन जी की कहानियों में चित्रित नारी पात्र हर स्थिति में अपने आप पर निर्भर रहना चाहते हैं । 'मोहलत' कहानी की नीला भी इसी बोझ के कारण ना चाहते हुए भी अपने पति के साथ ससुराल चली जाती है । इन सभी पात्रों से ज्योत्स्ना जी यही दर्शाना चाहती है कि हर हालात में, हर परिस्थिति में, हर समस्या में और संघर्षशील जीवन में भी नारी आत्मनिर्भर बन सकती है ।

निष्कर्षः

ज्योत्स्ना मिलन जी की कहानियों में चित्रित नारी पूरी तरह से स्वतंत्र या अधिकार प्राप्त है ऐसा बिलकुल नहीं, मगर आज तक नारी साहित्य का इतिहास केवल यही बताता है कि नारी का काम केवल सहन करना है । चाहे वह गलत हो या सही हो, सहनशील हर हाल में नारी को ही बनना पड़ता है । आज भी परिस्थिति कुछ बदली है ऐसा हम बिलकुल नहीं कह सकते, क्योंकि नारी की सशक्तिकरण की बात अगर हम उठाते हैं तो बहुत कम प्रतिशत इसके परिणाम हमें देखने मिलते हैं । आज शारिरीक दृष्टि से वह सक्षम जरूर बनी है, मगर मानसिक सशक्तिकरण की आज भी उसे जरूरत है, और ज्योत्स्ना जी की कहानियों में चित्रित

नारी पात्र, आम नारी का प्रतिनिधित्व करते हैं । वो अपने सामान्य जीवन में कई असामान्य समस्याओं का सामना करती है, मगर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ज्योत्स्ना मिलन की कहानियों में चित्रित नारी पात्र अपने जीवन से कभी हारते नहीं है, टूटते नही, बिखरते नहीं बल्कि अपने आशावादी दृष्टिकोण से जिंदगी में आगे बढ़ते हैं। उनका यही आशावाद नारी विमर्श को एक नई दृष्टि प्रदान करता है । जहाँ नारी का यह आशावाद उसकी हिम्मत और ताकत बनता है । वास्तविक स्त्री जीवन में समस्याएँ आज भी है और जब तक उसका अस्तित्व है तब तक रहेंगी, मगर जिंदगी की तरफ देखने का उसका यह आशावादी दृष्टिकोण नारी विमर्श को एक नई दृष्टि प्रदान करता है ।

संदर्भः

1. 1.ज्योत्स्ना मिलन की लोकप्रिय कहानियाँ- ज्योत्स्ना मिलन
2. अंधेरे में इंतजार - ज्योत्स्ना मिलन
3. केशर माँ - ज्योत्स्ना मिलन
4. अ अस्तु का - ज्योत्स्ना मिलन
5. स्मृति होते होते - ज्योत्स्ना मिलन
6. चाक – मैत्रेयी पुष्पा